APH PUBLISHING CORPORATION

4435-36/7 ANSARI ROAD
DARYAGANJ, NEW DELHI-110 002
Tel.:011-23274050/9810121903/9810136903/9818581487
E-Mail:aphbooks@gmail.com
(Publishers of Educational Journals and Books for last 45 years)

CERTIFICATE OF APPRECIATION

This certificate is awarded to ...... Narendra Vasant Raghatate ......
...... अहिंसक पुजारी' महात्मा गांधी ......
for contributing their Article/Research Paper in our Journal ...... EDUCATION TIMES ......
ISSN ...... 2319-8265 ...... Volume No. ...... IX ...... Issue Number ...... 12 ...... for month/year
...... Jan 2018 ......

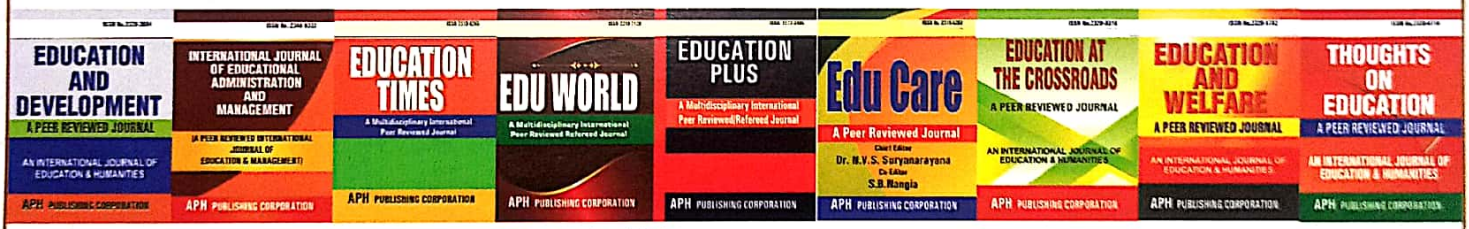

Place of Issue-New Delhi

APH PUBLISHING CORPORATION
4435-36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Authorized Signatory
APH PUBLISHING CORPORATION
NEW DELHI

Scanned with CamScanner

Vol. IX
Number-12

ISSN 2319-8265
(Special Issue) January, 2018

UGC Number-62976

EDUCATION TIMES

A Multidisciplinary International Peer Reviewed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned with CamScanner

ISSN : 2319-8265

EDUCATION TIMES

A Multidisciplinary International Peer Reviewed Journal

Vol. IX, Number - 12 January, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned with CamScanner

CONTENTS

Phytochemical Characteristics of the Essential Oils Extracted From Hydnocarpus Wightianus Seeds Collected From Various Sacred Groves of Kerala State 1
Sajith S.

Impact of Artificial Intelligence in Banking and Financial Service Sector 4
Dr. Sunil Gehlot

A Study on Customers Attitude Towards Online Shopping in India and its Impact 9
Dr. Rahul S. Kharabe

Women Empowerment 13
Dr. Meenu Vishnoi

Bit Coin: A Peer-to-Peer Electronic Cash System 17
Dr. Rahul S. Kharabe

Entrepreneurial Attitude Among Commerce and Management Graduate Students 24
Dr. Prajisha Kayalatt

Impact of Make in India Campaign on the Indian Economy 31
Dr. Rahul S. Kharabe

Larkin: A Movement Poet in English Poems 37
Dr. Anuradha Singh and Dr. Ashutosh

A Study of Trainee Students Response and Ideal Behaviour in the Classroom Environment 41
Md. Sadre Alam

Performance Assessment in Elite Football Players: Field Level Test Versus Spiroergometry 51
Dr. Zakir S. Khan

The Novels of Graham Greene: His Narrative Skill 57
Dr. Sangeeta Arora

A Study of Impact of Organizational Climate on Adjustment Level of College Teachers in Lucknow City 62
Dr. Brijesh Chandra Tripathi

Harmful Chemicals in Artificial Food Preservatives 70
Dr. Bineeta Yadav

Scanned with CamScanner

Nawab Abdul Latif: A Traditionalist Modern Reformer of the Nineteenth Century 73
Md. Ginnatulla Sk.

Accreditation System in Diagnostic and Research Laboratories: Brief study 78
Dr. Navneet Kumar R. Singh

Indian Music as a Career Option-Newly Emerging Trends and Traditional Employability 80
Dr. Vandana Sharma

Indu's Search for Self-Identity in Roots and Shadows 86
Dr. Mahadeo Raghunath Jare

Beauty as the Guiding Principle in Rabindranath Tagore's Poetry 91
Dr. Madhu Jain

On a Structure Defined by a Tensor Field F(≠ 0) of Type (1,1) Satisfying aF2 + bF + cI = 0 95
Kaushal Kumar Bajpai

"Spaces" and "Shadows": Analysis of the Narrative Technique in Amitav Ghosh's Shadow Lines 106
Surbhi Khurana

Human Trafficking in Pre-Modern India: A Study of the Institution and the Modes of Slavery 109
Dr. Manu Jayas

Impact of Socio-Economic Status of Parents on Study Habit of Secondary School Students 114
Mr. Prasanna Kumar Gouda, Dr. Minati Rani Mohapatra and Dr. Dibakar Sarangi

Past, Present and Future of Multidimensional Education 118
Jayarama Reddy

The Indian Perspective of Trafficking of Human Organs 130
Dr. Puja Makhijani

'बुध्दाचा धम्म आणि दहशतवाद': एक अध्ययन 138
Dr. Narendra Vasant Raghatate

'अहिंसाके पुजारी' महात्मा गांधीः एक चिंतन 143
Dr. Narendra Vasant Raghatate

मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक चेतना 149
प्रा. डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे

Scanned with CamScanner

'अहिंसाके पुजारी' महात्मा गांधीः एक चिंतन

Dr. Narendra Vasant Raghatate*

गोशवारा

भारतीय धर्म में अहिंसा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वेदो, उपनिशदों, स्मृतियों तथा दर्शन आदी में अहिंसा का वर्णन किया गया है। अहिंसा की सिधी परिभाषा याने हिंसा न करना। अहिंसा के प्रकार –1) शारीरिक अहिंसा 2) वाचिक अहिंसा 3) बौद्धिक अहिंसा। जब मनुष्य को बौद्धिक अहिंसा प्राप्त होती है तो उसके व्दारा शारीरिक तथा वाचिक अहिंसा का पालन स्वतः होने लगता है। कभी–कभी तो जो अहिंसा प्रतीत होती है वह वास्तव में हिंसा होती है और जो हिंसा प्रतीत होती है वह अहिंसा होती है। दुसरे दृष्टिकोन से कही अहिंसा धर्म प्रतित होती है तो कही अधर्म। कही पर अहिंसा पुण्य है तो कही पर पाप। महर्षि पतंजली के योगदर्शन में तो अहिंसा को अनण्यसाधारण महत्व दिया गया है। जैन धर्म में तो अहिंसा का पालन बहुत उंचे स्तर पर किया जाता है। बौद्ध धर्म और दर्शन के प्रवर्तक भगवान बुद्ध स्वयं अहिंसक थे। देखा जाये तो गांधी की समस्त विचारधारा दो केंद्रित 'भावस्त्रोतों'' सें ही पनपी हैं। एक भाव है 'सत्य' तथा दुसरा है 'अहिंसा'। गांधी के लिये अहिंसा प्रेम का सर्वव्यापी नियम है जिससे समस्त प्राणी संचालित है। गांधीजी सत्य और अहिंसा के आपसी संबंधों को स्पष्ट कर रहे है। उन्हे वे एक ही सिक्के दो पक्ष कहते है। वे सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य मानते है और इस तरह से पवित्र साध्य की प्राप्ति हेतू साधन भी सच्चे और शुद्ध, अहिंसात्मक ही होने चाहिय ऐसा उनका मानना है। गांधी के नीतिदर्शन के साधन और साध्य की एकरूपता हम अमरीकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक डीवी से कर सकते है। गांधी अहिंसा शब्द का प्रयोग भावात्मक तथा निषेध ात्मक दोनो अर्थ में करते है। गांधी का कहना है की कुछ कुछ परिस्थिती में हिंसा का पूर्ण त्याग तो सम्भव नही है – जैसे श्वास लेने में। गांधी के मतानुसार अहिंसा का भावात्मक स्वरूप वस्तुतः प्रेम है। इसप्रकार गांध ी के अनुसार अहिंसा कर्म की प्रेरणा है। आधुनिक युग में गांधी ने राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर बड़े विशाल रूप में अहिंसा का पालन स्वयं किया और अहिंसा के रास्ते पर चलने का दुसरों को उपदेश दिया। गांधी का कहना है की समाज में फैले अन्यास, भय, अत्याचार आदि का निवारण अहिंसा के पालन से किया जा सकता है। यदी हम गांधी के अहिंसा के पथपर चलते है तो समाज और राष्ट्र में शांति, भाईचारा, सलौख्य बना रहेगा और दुनिया में यह एक प्रचार होगा की अहिंसा परमो धर्म।

प्रस्तावना

भारतीय धर्म में अहिंसा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वेदो, उपनिषदों, स्मृतियों तथा दर्शन आदी में अहिंसा का वर्णन किया गया है। अहिंसा की सिधी परिभाषा याने हिंसा न करना। सामान्य तौर यह कह

*Assistant Professor, HOD Dept. of Philosophy, Shri Binzani City College, R.T.M. Nagpur University, Nagpur (M.S.),
E-mail: raghataten77@gmail.com

Scanned with CamScanner

सकते है की किसी के प्राणों का वियोग न करना अहिंसा है। योगदर्शन में व्यासमुनी कहते हैं, "सर्व प्रकार से सर्वकाल में सर्व प्राणियों के चित्त में भी द्रोह न करना अहिंसा कहलाती हैं।"[1]

अहिंसा के प्रकार

1. **शारीरिक अहिंसा :-** इसका अर्थ है की शरीर के स्तर पर हिंसा न करना। किसी के प्राणों का वियोग न करणा, बल्कि ऐसा व्यवहार करना जो शारीरिक स्तर पर सुख तथा शांति प्राप्त कराए।
2. **वाचिक अहिंसा :-** इसका अर्थ है की वाणी व्दार किसी को कष्ट न पहुँचाये, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग दुसरो के लिये ना करे बल्कि ऐसे शब्दो का प्रयोग करें जिससे नम्रता, प्रसन्नता का भाव निर्माण हो।
3. **बौद्धिक अहिंसा :-** इसका अर्थ है की, अपनी बुद्धि में भी किसी को किसी प्रकार का कष्ट अथवा हानी पहुँचाने का विचार न रखना बल्कि सबका सुख, लाभ, भलाई हो ऐसा सोचना ही बौद्धिक अहिंसा है।

जब मनुष्य को बौद्धिक अहिंसा प्राप्त होती है तो उसके व्दारा शारीरिक तथा वाचिक अहिंसा का पालन स्वतः होने लगता है। भवितू "अहिंसा की सिद्धि होने पर उसके समीपवर्ती प्राणियों में भी बैर का अभाव हो जाता है।"[2]

कभी–कभी तो जो अहिंसा प्रतीत होती है वह वास्तव में हिंसा होती है और जो हिंसा प्रतीत होती है वह अहिंसा होती है। इसलिए यह आवश्यक बन जाता है की अहिंसा का स्वरूप वास्तव में है क्या? उदाहरण के रूप में माँ बच्चे का ताडण करती है तो, उस समय बच्चे को कष्ट होता है परंतु माँ की यह ताडण बच्चे के कल्याण हेतू अथवा उसके सुख के हेतु होती है। बाहयरूप से देखने पर यहा माँ की हिंसा दिखाई देती है परंतु वास्तवमें वह हिंसा न होकर अहिंसा होती है। इसी प्रकार गुरू शिष्य का ताडण उसके कल्याण के लिए करता है। डॉक्टर रोगी का ऑपरेशन उसे उस पिडा या दुःख से छुडाने के लिये करता है। अतः उपर्युक्त उदाहरणों में ये सब अहिंसा काही पालन करते है और यदी यह इस तरह से व्यवहार नही करते तो वह हिंसा कहलाती। इस का मतलब माँ, गुरू, डॉक्टर का उद्देश दुःख देने का होता तो उनका वह व्यवहार हिंसा कहलाता।

दुसरे दृष्टिकोन से कही अहिंसा धर्म प्रतित होती है तो कही अधर्म। उदाहरण के तौर पर एक सेनानी युद्ध के समय जीतने अधिक दुश्मनों को मारेगा वह उतनाही श्रेष्ठ कहलायेगा। ऐसा करना उसका कर्तव्य है, धर्म है और यदि वह ऐसा नही करता तो वह कायर कहलायेगा या अधर्मी। महाभारत मे श्रीकृष्ण अर्जुन से युद्ध करने के लिये कहते है और वह यह भी कहते है की ऐसा करना उसका धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कंस, शिशुपाल आदि अनेक आततायियोंको मारा था। श्री रामचंद्र जी ने स्वयं रावण का वध किया था। ऐसा करके उन्होंने अपने धर्म का पालन किया था।

उपर्युक्त तत्थ्यों से यह सिद्ध होता है की कही पर अहिंसा पुण्य है तो कही पर पाप। एक सन्यासी जितना अहिंसक हो सकता है उतना एक किसान या मजदुर चाहते हुये भी नही हो सकता। वैसे देखा जाये तो, मनुष्य पूर्णतः अहिंसक भाव ला सकता है परंतू व्यवहार से यह अशक्य प्राय है। उससे किसी न किसी प्रकार से कुछ न कुछ हिंसा होही जाती है। पूर्ण अहिंसा तो एक आदर्श है।

Scanned with CamScanner

न्यायदर्शन में कहा गया है की, "योगशास्त्र में वर्णित यम, नियमों व्दारा युक्ति की योग्यता प्राप्त करने का उपाय करना चाहिए।"[3] यमों का मूल तो अहिंसा ही है। सांख्यसूत्र के भाष्यकार आचार्य विज्ञान भिक्षू ने कहा है की, "जिस प्रकार दृष्ट साधनों में हिंसा पाप का कारण होती है जैसे ही यज्ञादि कार्यों में भी की गयी हिंसा पाप की लिए होती है।"[4] आचार्य ईश्वर कृष्ण कहते है की, "हिंसा सदा ही पाप और दुःख के लिये होती है।"[5]

महर्षि पतंजली के योगदर्शन में तो अहिंसा को अनण्यसाधारण महत्व दिया गया है। पातंजल अष्टांग योग का आधार यम और नियम है, इसमें यमों का आधार ही अहिंसा है। शेष यम अहिंसा की पुष्टि के लिये ही है।

जैन धर्म में तो अहिंसा का पालन बहुत उंचे स्तर पर किया जाता है। बौद्ध धर्म और दर्शन के प्रवर्तक भगवान बुद्ध स्वयं अहिंसक थे। भगवान बुद्ध को दया और करूणा की मूर्ति माना गया है जिसका भाव अहिंसक होना है।

देखा जाये तो गांधी की समस्त विचारधारा दो केंद्रित 'भावस्त्रोतों'' सें ही पनपी हैं। एक भाव है 'सत्य' तथा दुसरा है 'अहिंसा'। दोनो भावो को वे एक विशेष अर्थ में अभिन्न भी कहते है क्योंकी एक का विचार अनिवार्यतः दुसरे तक ले ही जाता है। उनकी स्विकारोक्ति है की सत्य की तलाश में उन्हें अहिंसा का विचार भी प्राप्त हो गया। सत्य पर किये गये अपने प्रयोगों से वे अपने आप 'अहिंसा' पर आ गये। वे कहते है, "I have nothing new to reach the world. Truth and Non-violence as old as the hills. All I have done is to try experiments in both on as vast a scare as I could. In doing so I have sometimes erred and learnt by my errors. Life and its problems have thus become to me so many experiments in the practice of truth and non-violence..... In fact it was in the course of my pursuit of truth that I discovered Non-violence."[6]

गांधी के लिये अहिंसा प्रेम का सर्वव्यापी नियम है जिससे समस्त प्राणी संचालित है। परमसत्य की एक अभिव्यक्ति होने के नाते अहिंसा में गांधीदर्शन में एक तत्त्वमीमांसात्मक स्थान प्राप्त है। अहिंसा और सत्य एक दुसरे से अपृथक है और एक दुसरेकी पूर्व मान्यताएँ है। वे परस्पर इतने अंतर व्याप्त है की उन्हे एक–दुसरे से स्वतंत्र करना व्यावहारिक रूप से असंभव है। सत्य और अहिंसा का समीकरण भारतीय तत्त्वमीमांसात्मक चिंतन में गांधी का एक भौतिक योगदान है।

"Ahimsa and Truth are so interwined that it is practically impossible to disentangled and separate them. They are like the two sides of a coin, or rather a smooth unstamped metallic disc. Who can say which the obverse is and which reverse? Ahimsa is the means, Truth is the end. Means to be means must always be within our reach, and so Ahimsa is our supreme duty. If we take care of the means, we are bound to reach the end sooner or later."[7]

उपरोक्त पंक्तियों व्दारा ऐसा दिखाई देता है की गांधी सत्य और अहिंसा के आपसी संबंधों को स्पष्ट कर रहे है। उन्हे एक ही सिक्के दो पैलु कहते है। अधिक उपयुक्त उपमा के तौर पर एक दोनो और से चिकने तथा एक जैसे दिखाई देनेवाले धातु डिस्क की देते है, जिसमें यह कहना कठिन हो कि यह किस ओर सिध ा है और किस ओर उल्टा। पुनः वे अहिंसा को साधन कहते है, तथा सत्य को साध्य। साध्य उद्देश होता है, लक्ष होता है, अतः दुर होता है, किंतु साधन साधन इसलिये है की वह हाथ में है, अपने पास है। अतः उचित ढंग से साधन का उपयोग हो तो लक्ष प्राप्त होगा ही।

Scanned with CamScanner

गांधीजी के लिये अहिंसा, सत्य की अनेक अभिव्यक्तियों में से एक अभिव्यक्ती होने के नाते एक सत्तामूलक धारणा है। अतः यह नीतिशास्त्र का सर्वोच्च साध्य है। किंतू यह साधन भी है जिससे हम सत्य तक पहुँच सकते है। गांधी के नीतिशास्त्र में साधन और साध्य की एकरूपता उतनी ही मौलिक है और महत्वपूर्ण है जितना उनका सत्य और अहिंसा का सिद्धांत। अतः गांधी ने साधन शुद्धता पर भी बल दिया है। वे कहते है की अपने साधनके अनुरूप ही हम अपना लक्ष साध सकते है। अपवित्र साधन सदैव ही साध्य को अपवित्र कर देगा। असत्य से हम सत्य तक नही पहुँच सकते।

वे सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य मानते है और इस तरह से पवित्र साध्य की प्राप्ति हेतू साधन भी सच्चे और शुद्ध, अहिंसात्मक ही होने चाहिये। यदी हिंसा से हम सत्य प्राप्त करने का प्रयास करते है तो हमे हमारा सत्य या ईश्वर कदापी प्राप्त नही हो सकता। और ऐसा करते है तो सच्चे रूप में वो सत्य भी नही होगा जिसे हमने अहिंसा व्दारा प्राप्त किया है। इसी कारण गांधी सत्य की सिद्धि में अहिंसा को राजमार्ग मानते है।

गांधी के नीतिदर्शन में साधन और साध्य की एकरूपता हमें अमरीकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक डीवी की याद दिलाती है। डीवी स्वयं गांधी की तरह ही साधन और साध्य को निकटवर्ती रूप में प्रस्तुत कर, अपेक्षित लक्ष की प्राप्ति के लिये माध्यम के महत्व पर बल देते है। उनके अनुसार भी साधन से साध्य तक एकसुत्रता है। साध्य की प्राप्ति के लिये साधनों की उपेक्षा करना डीवी मूर्खतापूर्ण मानते है। लक्ष की सिद्धि के लिये माध्यम का सही ज्ञान अत्यावश्यक है। लक्ष को माध्यम से पृथक करना, डीवी के अनुसार अविवेकपूर्ण है।[8]

गांधी के अनुसार अहिंसा सत्य के लिये है। वे कहते है, "मै तो प्रत्यक्ष ईश्वर का दर्शन करना चाहता हूँ। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर को पहचानने का मेरे निकट तो एकही अचूक साधन अहिंसा है, प्रेम है।"[9] गांधीजीके अनुसार, "अहिंसा उस ज्योत का नाम है जिससे सत्य का दर्शन होता है।"[10] अहिंसा ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा–सा मार्ग है।"[11]

एक बात तो हैं की गांधी से पहले अहिंसा को कभी भी सत्तामूलक नही समझा गया। गांधी अहिंसा को न केवल एक नैतिक सद्‌गुण मानते है बल्कि वे उसे परमसत्ता की एक अभिव्यक्ति भी स्वीकार करते है। उनके लिये समस्त जगत् अहिंसा पर आधारित है। अहिंसा न केवल मनुष्य में निहित है बल्किं वह तो संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। वह जगत का अन्तर्निहित सत्य है। वह व्यावहारिक जगत की एक संकेंन्द्रित और सशक्तशील शक्ति है।

स्पश्ट है की ऐसी शक्ति केवल नकारात्मक नही हो सकती। अहिंसा शब्द निशेधात्मक 'अ' उपसर्ग से आरम्भ होता है जिसका अर्थ होता है दुसरे प्राणियों की हानि या हत्या न करना। किंतू गांधी अहिंसा के शाब्दिक अर्थ से कही आगे बढ़ जाते है। उनके नीतिचिंतन में अहिंसा अकर्म का सिद्धांत न होकर एक ऐसी सक्रिय शक्ति बन जाती है जो सर्वोच्च है। गांधी इसे आत्मबल कहते है।

गांधी अहिंसा के संबंध में बौद्ध और खासकर जैन विचार से अत्याधिक प्रभावित है। जैन धर्म में अहिंसा की अनुशंसा बड़े ही कठोर ढंग से की गयी है। गांधी को यह अवगती थी कि सामान्य जीवन में सामान्य मनुश्यों के लिये अहिंसा का इस कठोर रूप में पालन न तो व्यावहारिक है और न संभव है। अतः वे अहिंसा के निशेधात्मक शर्तों को उतना कठोर नही बना देते जितना कठोर जैन धर्म में बनाया गया है। गांधी अहिंसा शब्द का प्रयोग भावात्मक तथा निशेधात्मक दोनो अर्थ में करते है। गांधी का कहना है की कुछ कुछ परिस्थिती में हिंसा का पूर्ण त्याग तो सम्भव नही है – जैसे श्वास लेने में, खाने में, पिने में आदी। इन क्रियाओं में कुछ जीवों का

Scanned with CamScanner

हनन होता जाता है, चलते वक्त किडे, मकोडें पैरोंतलें आकर मर जाते है। तथा उनसे बचना प्रायः असंभव है। इसके अतिरिक्त गांधी यह भी मानते है की कुछ विशेश परिस्थितीयों में हिंसा भी अनुशंसित हो सकती है। मान लें एक पागल बन्दूक लेकर लोगों की हत्या करता चल रहा है, यदि उसे अन्य ढंगों से पकडा नही जा रहा है, और वह हत्या करता ही जा रहा है, तो उसकी हत्या अनुशंसित हो सकती है। "Suppose a man runs amuck and does furiously about sword in hand, and killing anyone that comes in his way and no one dares to capture him live. Anyone win dispatches the lunatic, will earn the gratitude of the community and be regarded as a benevolent man"[12] इस विचार को गांधी ने बड़े ही स्पश्ट रूप में स्वीकारा भी है, तथा उसकी अनुशंसा भी की है।

गांधी के मतानुसार अहिंसा क्षेत्र असिमित है। खाने–पिने, नहाने–धोने तक में गांधी ने अहिंसा बतलाई है। अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तक फैली हुई है।

अतः हम कह सकते है की 'हत्या' अथवा 'किसी को पिडा पहुचाना' इसे 'हिंसा' तभी कहा जा सकता है जब इसे 'हिंसा' बनानेवाली कुछ शर्त उपस्थित हों। ये शर्ते है क्रोध, अहंकार, घृणा, ईर्श्या, व्देश, स्वार्थ, बुरे अभिप्राय तथा ऐसी ही अन्य मानसिक वृत्तियाँ। इन्ही वृत्तीयों के अंतर्गत की गयी 'हत्या' या 'पिडा' 'हिंसा' के उदाहरण कहे जा सकते है। इसका का सिधा अर्थ है की 'अहिंसा' ऐसी मानसिक वृत्तियोंसे सर्वथा उपर है, मुक्त है।

किंतु यह तो अहिंसा का निशेधात्मक आयाम है, अहिंसा में क्या नही रहता – इसका संकेत देता है। लेकिन गांधी के लिये अहिंसा का भावात्मक पक्ष अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है। उनके लिये अहिंसा का मतलब मात्र हिंसा का त्याग नही हैं, इसके अंतर्गत भावात्मक लक्षण तथा मनोवृत्तियाँ आती है, अन्य जीवों के प्रति एक विशेश प्रकार के भाव की बात होती है। वे कहते है की मानव में 'मानवीयता' एक मूल एवं अनिवार्य लक्षणों में अहिंसा है। अहिंसा मानव जाती के जीवन का एक मूल नियम है।

गांधी के मतानुसार अहिंसा का भावात्मक स्वरूप वस्तुतः प्रेम है। प्रेम एक आन्तरिक एकता की भावना है। प्रेम में अपने प्रिय से एक ऐक्य – एक तादात्म्य स्थापित होता है। अतः प्रेम का अर्थ है क्रोध, बदले की भावना, मनोमालिन्य, व्देश आदिसे मन को मुक्त रखना। गांधी स्विकारते है की प्रेम कोई सरल अभिवृत्ती नही है। घृणा, ईर्श्या सरल है, प्रेम के लिये आन्तरिक सशक्तता की आवश्यकता होती है। इसीलिये निर्बल तथा कमजोर व्यक्ति अहिंसा का प्रयोग नही कर सकता।

इसप्रकार गांधी के अनुसार अहिंसा कर्म की प्रेरणा है। यह उदासीनता या निश्क्रियता की मनोवृत्ती नही है। अहिंसा का पालक वस्तुतः हर क्षण अहिंसा का पालन करता ही रहता है, क्योंकी इसका पालन सतत संकल्प, चिन्तन तथा कर्मो के व्दारा होता है। और इसिलिये वे कहते है की, अहिंसा का पालन तबतक संभव नही है, जबतक ईश्वर में अटूट आस्था न हो। अहिंसा पालन के लिये असिम शक्ति की आवश्यकता होती है और वह तभी संभव है जब ईश्वर में पूर्णरूपसे सक्रिय, सजीव तथा अटूट आस्था हो। और यह ईश्वर में आस्था ही मानवता के प्रति प्रेम में परिणत हो जायेगा।

आधुनिक युग में गांधी ने राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर बड़े विशाल रूप में अहिंसा का पालन स्वयं किया और अहिंसा के रास्ते पर चलने का दुसरों को उपदेश दिया। इसीलीये लोग उन्हें अहिंसा के पुजारी मानते थे। बहुतसे लोग तो ऐसा भी मानने लगे थे की गांधी ने ही संसार को अहिंसा का सिद्धांत दिया जबकि यह सिद्धांत तो अति प्राचिन है।

Scanned with CamScanner

गांधी का कहना है की समाज में फैले अन्यास, भय, अत्याचार आदि का निवारण अहिंसा के पालन से किया जा सकता है। अन्याय, शोशण आदि को दूर करने के लिये हिंसा का सहारा लेना अनुचित है। बैर से बैर शांत नही होता है। युद्ध से युद्ध का जन्म होता है। अतः अहिंसा को संगठित करना होगा। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा को प्रतिश्ठित करके सब प्रकार की हिंसाओं को दूर किया जा सकता है। "जीवन की प्रत्येक विभूति में अहिंसा का उपयोग है।"[13]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है की अहिंसा प्राचिन समय से धर्म, दर्शन का विशय चला आ रहा है। भारत में संत महात्मा, योगाभ्यासी आदि अहिंसा का पालन करते चले आये हैं। गांधीजी ने व्यापक स्तर पर सामाजिक और राजनैतिक जीवन में अहिंसा का उपयोग किया। अहिंसा के संबंध में उनके अधिकतर विचार तो अहिंसा की प्राचिन मान्यताओं से मेल खाते है पर कही–कही कुछ अलग है। और यदी हम गांधी के अहिंसा के पथपर चलते है तो समाज और राश्ट्र में शांति, भाईचारा, सलौख्य बना रहेगा और दुनिया में यह एक प्रचार होगा की अहिंसा परमो धर्म। क्योंकि यही आज की मांग है। और यदी हम ऐसा करते है तो दुनिया में शांती, सुख, भाईचारा बना रहेगा ऐसा मैं सोचना हूँ।

संदर्भ सूची

1. तत्रहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोहः। व्यासभाश्य, मो.सू. 2/30.
2. अहिंसा प्रतिश्ठायां तत्सन्तिधौ वैरत्यागः।। मो.सू. 2/35
3. तदर्थ यमनियमाभ्यासात्मलंसंस्कारोयोग्याच्चध्यात्मविध्युपायैः। नां.सू. 4/2/46
4. सदृश्टोपायवदेवाशुध्दया हिंसादि पापेन विनाशीसातिशयफलकत्वेन च युक्त इत्यर्थः। (सांख्यप्रवचन भाश्य 1/6..
5. दृश्टवदानुश्रविकः स ह्ययविशुद्धिक्षमातिशययुक्तः। तव्दिपरीतः श्रेयान् व्यक्ता व्यक्तज्ञ विज्ञानात्।। (सांख्यकारिका–2)
6. बोस एन. के. – 'सिलेक्शन फ्रॉम गांधी' एडीटेड, पृ. – 13.
7. पुनश्च – पृ. 13–14.
8. बंदिश्टे डी. डी. डॉ. और शर्मा रमाशंकर डॉ. – भारतीय दार्शनिक निबंध (व्दितीय संशोधिन परिवर्धित संस्करण) मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1991 (पृ. – 371)
9. हिन्दी नवजीवन साप्ताहिक पत्र दिनांक 6–4–1924.
10. तदेव दिनांक 26–12–1924.
11. हरिजन सेवक, साप्ताहिक पत्र दिनांक 10–11–1933.
12. यंग इंडिया साप्ताहिक दिनांक 4–11–1926.
13. गांधी सेवा संघ सम्मेलन, दिनांक 20–04–1937.
14. गांधी दर्शन मीमांसा.
15. कृपलानी जे. बी –गांधी, हिज लाईफ एंड थॉट, न्यु दिल्ली पब्लिकेशन डिवीजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 1975.
16. गांधी मोहनदास करमचंद – गांधी से महात्मा गांधी तक, पराग प्रकाशन.
17. गांधी मोहनदास करमचंद – सत्य के प्रयोग.
18. शर्मा कार्यानन्द – भारतीय दर्शन के मूल संप्रत्यय, 2016.

Scanned with CamScanner